E Content for students of Patliputra University Patna.

Course-B.A Hons,Part-2, Paper-4.

Subject- Philosophy

Title / Heading of Topic- " जॉन लॉक द्वारा जन्मजात प्रत्ययों (Innate ideas) का खंडन"

---- डॉ. राज नारायण सिंह,सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग
आर०आर०एस०कॉलेज मोकामा, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय पटना।

बुद्धिवादी दार्शनिक ज्ञान का स्वरूप सार्वभौम तथा अनिवार्य मानते है। ऐसा ज्ञान हमें इन्द्रियानुभव से प्राप्त नहीं हो सकता, अतः ऐसे ज्ञान को जन्मजात (Innate) कहना चाहिये, क्योंकि यह जन्म से ही मानव मस्तिष्क में विद्यमान रहता है या इसकी उत्पत्ति अनुभव से नहीं। लॉक जन्मजात प्रत्ययो के खण्डन के लिए निम्नलिखित तर्क देते हैं-

1. बुद्धिवादी दार्शनिक सार्वभौम तथा अनिवार्य ज्ञान को जन्मजात मानते है।लॉक के अनुसार ऐसा कोई दार्शनिक या व्यावहारिक सिद्धान्त नहीं जिसे सारे विश्व के लोग स्वीकार करते हो। यदि सारा विश्व किसी एक विचार से सहमत हो तो उसे सार्वभौम माना जा सकता है, परन्तु सार्वभौम होने से यह विचार जन्म जात नहीं। मनुष्य किसी दूसरे कारणवश भी एकमत हो सकता है।

2.कुछ लोग कहते है कि जन्मजात प्रत्यय हममें जन्म से विद्यमान रहते हैं, परन्तु हमें सर्वदा उनकी प्रतीति नहीं होती, क्योंकि वे प्रत्यय अचेतन मस्तिष्क में रहते है। लॉक का कहना है कि वस्तु का होना एवं उसी प्रतीति का न होना असम्भव है। तात्पर्य

यह है कि यदि जन्मजात प्रत्यय रहते तो उनकी प्रतीति अवश्य होती। होने का अर्थ ही प्रतिमान होना है। अतः अप्रतियमान अस्तित्व तो विरोधसूचक है।

3.यदि कोई सार्वभौम अनिवार्य ज्ञान है तो उसकी सत्ता सबमें होनी चाहिये। पागल, मूर्ख आदि सबमें वह ज्ञान विद्यमान होना चाहिए। पागल, मूर्ख, बालक को किसी भी सार्वभौम नियम का पता नहीं। यदि कोई कहे कि सार्वभौम ज्ञान उनमें भी है, पर चेतनरूप से नहीं तो यह कहना व्यर्थ है, क्योंकि ज्ञान का अर्थ ही चेतना है। अचेतन ज्ञान की सत्ता नहीं स्वीकार की जा सकती। कोई भी बच्चा जन्म से यह नहीं जानता कि ३+४-७, वरन् वह एक से सात तक गिनती सीख कर ही जानता है कि तीन और चार का योग सात होगा। कुछ मूर्ख गिनती भी नहीं जानते।

4.बुद्धिवादी दार्शनिको का कहना है कि तादात्म्य का नियम (Law of identity) तथा विरोध का नियम (Law of Contradiction) आदि मौखिक जन्मजात प्रत्यय है। लॉक का कहना है कि किसी व्यक्ति को इन नियमो का पता बिना सीखे लग सकता। यदि ये नियम जन्मजात होते तो बच्चे मूर्ख,जंगली, असभ्य आदि सभी इसे जानते।

5. कुछ लोगों का कहना है कि नैतिक नियम (Moral principles) जन्मजात है, क्योंकि नैतिक नियम सभी देश तथा समाज में समान है। उदाहरणार्थ, न्याय (Justice) की धारणा सभी मनुष्यों में है। लॉक का कहना है कि ऐसा कोई भी नैतिक नियम नहीं जिसे सारे संसार के लोग स्वीकार करते हों। प्रत्येक समाज के लिये आचार के नियम अपने देश तथा परिस्थिति के अनुसार होते हैं। सार्वभौम तथा सार्वकालिक नियन असम्भव है। एक समाज का आचार-नियम दूसरे समाज को मान्य नहीं। न्याय आदि के सिद्धान्त को अधिकतर लोग स्वीकार करते हैं, इसलिये नहीं कि वह जन्मजात है, वरन् वह हितकर है। हित या भलाई की धारणा

भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न-भिन्न है। अत: न्याय आदि नैतिक सिद्धान्त भी अलग-अलग है।

6.कुछ लोग ईश्वर प्रत्यय (Idea of God) को जन्मजात मानते है। लॉक का कहता है कि संसार में बहुत-सी जातीयाँ है जिन्हे ईश्वर का ज्ञान तक नही। पुनः यदि ईश्वर का प्रत्यय जन्मजात होता तो नास्तिक क्यों होते? यदि सभी मे ईश्वर-विचार समान होता तो ईश्वर को लेकर इतना विवाद क्यों उत्पन्न होता तथा ईश्वर के नाम पर इतना रक्तपात क्यों होता? अतः ईश्वर-प्रत्यय भी जन्मजात नहीं।

7.कुछ लोगो का कहना है कि जन्मजात जान तो हममें जन्म से ही विद्यमान रहते है, परन्तु बुद्धि विकसित हो जाने पर हम उन्हें पहचानते हैं। लॉक का कहना है कि यह सन्तोषजनक उत्तर नही। यदि बुद्धि के विकसित होने पर हम उन्हें पहचानते है तो केवल जन्मजात प्रत्ययों की क्षमता (Capacitics) ही जन्म के समय हो सकती है, जन्मजात प्रत्यय नही। यदि हम किसी नवजात शिशु का अध्ययन करें तो कुछ अस्पष्ट रूप से भूख, प्यास आदि के विचार भले ही उसमे विद्यमान हो, परन्तु वस्तुतः कोई स्पष्ट रूप से जन्मजात ज्ञान हम नही प्राप्त कर सकते इससे सिद्ध है कि जन्मजात ज्ञान नहीं है।

इस प्रकार लॉक जन्मजात प्रत्यय का खंडन करते हैं। लॉक के अनुसार सार्वभौम तथा अनिवार्य सत्य जन्मजात नहीं, तादात्म्य का नियम तथा व्याघात का नियम जन्मजात नहीं, नैतिक नियम जन्मजात नही, ईश्वर-प्रत्यय जन्मजात नहीं, द्रव्य-विचार जन्मजात नहीं, गणित के सिद्धान्त जन्मजात नहीं। सक्षेप में, कोई भी सत्य जन्मजात नहीं। इस प्रकार देकार्त्त, स्पिनोजा तथा लैबनिटज की मान्यता का लॉक खंडन करते हैं। उनके अनुसार हमारे समस्त ज्ञान का स्रोत अनुभव है। जन्म के

समय हमारा मन कोरे कागज, अंधेरे कमरे, साफ स्लेट के समान रहता है, इसपर कुछ भी अंकित नहीं रहता।

****